SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-4, June- 2024
www.shikshasamvad.com

"मध्यमिक स्तर के विधार्थियों में मूल्यों की कमी शिक्षा द्वारा ही सम्भव"

निश्चल कुमार
शोधार्थी
एम.जे.पी.रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

डॉ. बी.आर.कुकरेती
शोध निर्देशक
एम.जे.पी.रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

सारांश

प्रत्येक मानव के जीवन में कुछ न कुछ अनुभव अवश्य होते है जो समय की गति के साथ बढ़ते जाते हैं। यही अनुभव मानव व्यवहार को निर्देशित करने वाले सामान्य सिद्धांतों को जन्म देते है। यह सिद्धांत समस्त जीवन को एक दर्शन के रूप में परिवर्तित कर देते है तथा जीने की एक विशिष्ट कला को जन्म देते है और उनके पथ प्रदर्शक के रूप में कार्य करते है। मूल्य अथवा Values के नाम से जाने जाते हैं।

औपचारिक शिक्षा प्रणाली

- अध्यापक
- विद्यालय
- पाठ्य –सहगामी क्रियायें
  - विद्यालयी विषय तथा पाठ्यक्रम द्वारा
  - अप्रत्यक्ष विधि
  - प्रत्यक्ष विधि
  - विद्यालयी वातावरण

व्यक्ति के मूल इस बात का दर्पण होते है कि वे अपने सीमित व्यक्तित्व एवं समय में क्या करना चाहते है। जीवन के पथ प्रदर्शक के रूप में मूल्य अनुभवों के साथ अधिक परिपक्व होते जाते है। किसी भी मानव में विभिन्न प्रकार की शक्तियां आंशिक रूप से ही सक्रिय रहती है अधिकतर यह निहित ही रहती है क्योंकि इन पर हमारे मूल्य सम्बन्धी निर्णय अपना आधिपत्य जमाये रहते है। इनकी पूर्ण सक्रियता से ही मानव की अन्तर्निहित शक्ति का पूर्ण उपयोग होता है। मूल्यों का निर्धारण भारत जैसे देश में बहुत आवश्यक है क्योंकि यहा अनेक धर्म है एवं उनके अध्यात्मिक विचारधाराएँ है।

स्वतंत्र भारत ने बहुत प्रगति की है बहुत कुछ पाया है परन्तु खोया उससे भी अधिक हैं जिस एक बहुमूल्य वस्तु का ह्रास हुआ है वह है राष्ट्रीय जीव मूल्य। इस राष्ट्रीय पतन का मात्र एक कारण है आधुनिक शिक्षा में नैतिकता का अभाव। आधुनिक शिक्षा ने प्रगति के प्रति लालसा बढ़ाई हैं। इस अंधी दौड़ में जहाँ मनुष्य की महत्वकांक्षा बढ़ी है, इच्छाओं में वृद्धि हुई है, लोभ और लालसा ने ऊँची छलांगे लगाई है, उसके ज्ञान में कही कमी थी जिसके कारण दया, करूणा, सत्य, ईमानदारी, सहानुभूति एवं सहायता पर पर्दा पड़ता गया और धनोपार्जन मुख्य लक्ष्य बन गया।

(1) परिवार की भूमिका : परिवार मानव सम्बन्धों का मूल्य स्रोत है। परिवार को छोड़कर माता–पिता भाई–बहन कहीं मिलते नहीं, परन्तु मनुष्य परिवार से बाहर निकलकर भी स्त्रियों से मातृव्त्, बड़ों से पितृव्त, समान आयु वालों से भ्रातव्त् सम्बन्धों को बनाता है। अगर उसके पारिवारिक अनुभव सुखद और सामंजस्यपूर्ण होते हैं तो आगे चलकर वह वैसे ही सम्बन्ध बना लेता है।

रेमाण्ट के अनुसार – "**दो बच्चे भले ही एक स्कूल में पढ़ते हो, एक समान अध्यापक से प्रभावित हों, एक सा अध्ययन करते हो फिर भी वे सामान्य ज्ञान, रूचियों, भाषण, व्यवहार और नैतिकता में अपने घरों के कारण जहाँ से वे आते हैं, भिन्न होते है।**" परिवार से ही बच्चा मानवीय, सामाजिक, नैतिक सभी गुण सीखता है। यह गुण बच्चों को मूल्याधारित कहानियां सुनाकर, बच्चों के सामने अच्छा आचरण तथा क्रियायें करके तथा अपने बोलने–चालने, उइने –बैठने, वेशभूषा, खाने–पीने के ढंग से विकसित किए जा सकते हैं।

समाज में व्याप्त भ्रष्टाचारद – अनैतिकता व मूल्यविहीनता को देखकर कभी–कभी हम यह सोचेने पर विवश हो जाते है कि कहीं ऐसा तो नहीं आज बालक परिवार से ही मूल्य अनभिज्ञ व मूल्यविहीन होकर आ रहा है। यह चिन्तन हमें पुनः यह विचार करने पर बाध्य करता है कि समाज में व्याप्त मूल्यहीनता को सिर्फ परिवार के उत्तम वातावरण द्वारा ही दूर किया जा सकता है।

(2) **समाज की भूमिका :** मानव समाज अपने आदर्शो, मूल्यों और क्रियाओं को आने वाली पीढ़ियों को प्रदान करके जीवित रखता है। वे स्कूल का निर्माण भी ज्ञान, कौशलों, आदर्शो, मूल्यों तथा आदतों का प्रसार करने एवं सुरक्षित रखने के लिए करते हैं। समाज विभिन्न सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक क्रिया कलापों का आयोजन करके मूल्यों के विकास के लिए अवसर प्रदान कर सकता है। बच्चों में अनुकरण की मनोवृत्ति जन्मजात होती है अतः हमें उनके सामने आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए।

(3) **औपचारिक शिक्षा प्रणाली की भूमिका :** शिक्षा आयोग (1964 –64) के अनुसार **"विद्यालयी वातावरण, अध्यापक का व्यक्तित्व और व्यवहार तथा विद्यालय में मिलने वाली सुविधायें मूल्यों के विकास में अहम् भूमिका निभाती है।"**

अध्यापक : डा० राधाकृष्णन के अनुसार **"शिक्षा की प्रक्रिया में अध्यापक का बहुत महत्वपूर्ण स्थान होता है वह उस धुरी के समान है जो बौद्धिक परम्पराओं व तकनीकी क्षमताओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तान्तरित करता है और सभ्यता की ज्योति को प्रजज्वलित रखता है।"** अध्यापक उस मोमबत्ती के समान है जो स्वयं को जलाकर दूसरों को प्रकाशित करता है। वास्तव में अध्यापक शिक्षा पद्धति का केन्द्र बिन्दु होता है। अफसोस का विषय है कि वर्तमान परिवेश में अध्यापक का चारित्रिक व नैतिक ह्रास हुआ है। अध्यापन मात्र एक व्यवसाय और जीविकोपार्जन का साधन बनकर रह गया है। अध्यापक के उपदेशों का छात्रों के ऊपर कम प्रभाव पड़ सकता है परन्तु उसके आचरण और व्यवहार की एक अमिट छाप छात्रों के जीवन पर सदैव के लिए पड़ जाती है। वर्तमान परिस्थितियों में अध्यापक की भूमिका को महत्व देते हुए समाज ने नागरिकता विकास कार्यक्रम की रचना की है जिसका मुख्य कार्य देश के शिक्षकों के लिए मूल्य शिक्षा की व्यवस्था करना हैं। समाज समय–समय पर सेमिनार तथा कार्यशाला का आयोजन करता है, जिसका प्रमुख उद्देश्य शिक्षक–प्रशिक्षण तथा महाविद्यालयों, सदस्यों SCERT, DIET सदस्यों को मूल्य शिक्षा प्रदान करना है।

विद्यालय :– विनोबा भावे ने कहा है कि – **"मनुष्य घर में जीता है और मदरसे में विचार सीखता है। अतः जीवन और विचार में मेल नहीं बैठता है। इसका उपाए यह है कि एक ओर से घर में मदरसे का प्रवेश होना चाहिए और दूसरी ओर मदरसे से घर में घुसना चाहिए।"**

विद्यालयी विषय तथा पाठ्यक्रम : पाठ्य पुस्तकों में निहित सामग्री द्वारा नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक मूल्य दिए जा सकते है। विद्यालय में मूल्यों के विकास के लिए निम्न विषय होना चाहिए –

सामान्य पाठ्यक्रम : राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में सामान्य पाठ्यक्रम में भरतीय स्वतत्रंता संग्राम सैनानियों का जीवन परिचय, संवैधानिक जिम्मेदारियां तथा राष्ट्रीय पहचान से सम्बन्धित तत्व है जिससे राष्ट्रीय मूल्य विकसित होंगे।

भाषा शिक्षण : इसके द्वारा सामाजिक, मानवीय और आध्यात्मिक मूल्यों का विकास सम्भव है।

विज्ञान शिक्षण : यह सौंदर्य बोध, परोपकार, स्वच्छ, आदतें, जीवन, मूल्यों, सत्य, परिश्रम, सहयोग, विश्वबन्धुत्व आदि मूल्यों के विकास मे सहयोग देता है।

सामाजिक शिक्षण : लोकतान्त्रिक, नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, जीवन सम्बन्धी एवं संवैधानिक मूल्यों के विकास हेतु यह महत्वपूर्ण है। विद्यालय का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू जो मूल्यों पर प्रभाव डालता है वह है शिक्षण विधियां। शिक्षण विधियां दो प्रकार की होती है –

अप्रत्यक्ष विधि : स्कूल प्रार्थना पाठ्य –सहगामी क्रियायें, सभी धर्मो के धार्मिक उत्सवों का आयोजन, खेल–कूद, कार्यानुभाव, समाज–सेवा आदि मूल्य उत्पन्न करने की अप्रत्यक्ष विधियां है। इसके अलावा प्रार्थनाएं, कहानी–कथन, समूह गान, नृत्य, देशाटन, खेल आदि भी मूल्य विकास में सहायक हैं

प्रत्यक्ष विधि : नैतिक शिक्षा को हर स्तर पर विद्यालयी विषय के रूप में पढ़ाया जाएं। मूल्य विकास में सहयोगी विद्यालय का तीसरा पहलू वातावरण है।

विद्यालयी वातावरण : मूल्यों को विद्यालय के वातावरण में इस प्रकार घुल–मिल जाना चाहिए कि छात्र दि इसमें सांस भी ले तो वे मूल्य हवा के साथ भीतर पहुँच जायें। विद्यालयी वातावरण विद्यालय के द्वारा उत्पन्न समस्त प्रभावों, संरचना एवं व्यवस्था, परम्परायें एवं आदर्श, अध्यापक, छात्र एवं माता–पिता आदि का कुल योग है।

पाठ्य सहगामी क्रियायें : कहा गया है **"Value can the caught but not to be taught"** अर्थात् मूल्य ग्रहण किए जा सकते है लेकिन पढ़ाए नहीं जा सकते है। इस दृष्टि से स्कूल में आयोजित पाठ्य सहगामी क्रियाओं की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। जहां छात्र परिवेश द्वारा मूल्यों को स्वानुमान से ग्रहण करता है। ये पाठ्य सामग्री क्रियायें निम्न हो सकती है – सांस्कृतिक कार्यक्रम, शिक्षाप्रद, फिल्में, विभिन्न राष्ट्रीय एवं धार्मिक पर्वो का आयोजन, सामुदायिक कार्यक्रम, समाज–सेवा कार्यक्रम (एन०सी०सी०, एन०एस०एस०, स्काउट गाइड तथा धार्मिक कार्यक्रम) आदि। इससे धर्मनिरपेक्षता की भावना, दूसरों की संस्कत का आदर सेवा आदि मूल्य विकसित होते हैं। इसके अलावा अन्य हस्तक्षेप में अर्न्तराष्ट्रीय सांस्कृतिक विनियम, प्रदर्शनी, बाल–मेला, लोक संस्कृति कार्यक्रम, उपयुक्त परामर्श व निर्देशन आदि हैं।

शिक्षा देश की रीढ़ है। जिस प्रकार विकृत रीढ़ से एक व्यक्ति स्वस्थ नहीं कहला सकता उसी प्रकार विकृत शिक्षा–व्यवस्था से देश का निर्माण नहीं हो सकता। अतः मूल्यहवहीन मनुष्य पशु के समान है। शिक्षा में मूल्य रूपी बीज प्राथमिक स्तर पर बोया जाता है, माध्यमिक स्तर पर वह पौधा बनता है और उस पौधे से फल प्राप्त करने के लिए युवावस्था/उच्च स्तर तक उसे संरक्षित करने की अति आवश्यकता है। आजकल शिक्षा मात्र प्रमाण–पत्र/उपाधि प्राप्त करने का साधन है। आज छात्र शिक्षा केवल नौकरी पाने व धन कमाने के लिए करता है। शिक्षा के ऐसे दिगभ्रमित उद्देश्य के कारण ही मानव दानव के चारित्रिक गुण अपना रहा है। अतः मूल्य शिखा का मार्ग कठिन है लेकिन अध्यापक शिक्षा रूपी नैय्या का खेतनहार है उसे विपरीत लहरों के बीच नाव खेनी है और गन्तव्य तक ले जानी है।

परन्तु देश में व्याप्त हर कमी का कारण शिक्षा के नैतिक मूल्यों का अभाव ही नहीं है बल्कि बढ़ती बेरोजगारी भी है अतः शिक्षा में दोष ढूढ़ने के बजाए इसका व्यवहारिक समाधान निकालना चाहिए। आर्थिक नीतियां ऐसी हो कि रोजार के ज्यादा अवसर और स्रोत मिले। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद शिखा में सुधार हेतु जितने भी आयोग व समितियाँ बनी सबने अपनी रिपोर्ट में नैतिक शिक्षा पर बल दिया। हर विषय के माध्यम से मूल्यपरक शिक्षा को बढ़ावा दिया जा रहा है। के०मा० शिक्षा बोर्ड ने तो छात्रों के व्यक्तित्व के सर्वागींण विकास के लिए **सतत् व्यापक मूल्यांकन** को अनिवार्य कर दिया है। आधुनिक शिक्षा नैतिक आध्यात्मिक और मूल्यपरक है। जरूरत है तो उचित निर्देशन और परामर्श की ताकि हर छात्र जो शिक्षा ग्रहण करें वह अन्ततः जीविकोपार्जन में उसकी सहायता कर सकें तभी उसके मूल्य सुरक्षित और देश सफलता की ऊँचाई पर अग्रसर होता रहेगा।

संदर्भ :

1. उपाध्याय, प्रतिभा, भारतीय शिक्षा में उदीयमान प्रवृत्तियाँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद (2017)।
2. किरण, चाँद, (2019) शिक्षा, समाज और विकास, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली –02 ।
3. पांडेय, रामशकल मूल्य शिक्षा के परिपेक्ष्य, आर०लाल० बुक डिपो, मेरठ।
4. पांडेय रामशकल एवं मिश्र करूणाशंकर, (2019) मूल्य शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
5. चौबे, सरयू प्रसाद, शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2।
6. त्यागी, गुरसरन दास, (2020) शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

7. सक्सेना, एन०आर०स्वरूप, (2021) शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा –2 ।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-01, Issue-04, June- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-June-2024/25

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

निश्चल कुमार एवं डॉ. बी.आर.कुकरेती

For publication of research paper title

"मध्यमिक स्तर के विधार्थियों में मूल्यों की कमी शिक्षा द्वारा ही सम्भव"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-04, Month June, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com